सन्यास का प्रथम पड़ाव : पारमार्थिक शिक्षण संस्था

(संस्था के 60वें स्थापना दिवस पर विशेष)

–डॉ. सोहनराज तातेड़

भगवान् महावीर का दर्शन आत्मा का दर्शन है। भगवान् महावीर ने कहा–आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा अपने कर्मों की कर्त्ता है, आत्म अपने कर्मों की भोक्ता है, कर्मो से छुटकारा हो सकता है। सर्व कर्मों से छुटकारा मोक्ष है। भगवान् महावीर की इस वाणी में श्रद्धा एवं विश्वास करने वाला सम्यक् दर्शनी कहलाता है। सम्यक् दर्शन मोक्ष मार्ग की पहली मंजिल है, पहला पड़ाव है। आत्मा के साथ कर्म दूध मिश्री की तरह मिश्रित रहते हैं। कर्म बंधन का सम्बन्ध कषाय व योग से है। अनन्तानुबंधी कषाय के क्षीण होने पर सम्यक्दर्शन की प्राप्ति होती है। अप्रत्याखानी कषाय के क्षीण होने पर देश-विरति (व्रताव्रत) की भूमिका प्राप्त होती है। जैन दर्शन किसी घटना के घटित होने में उपादान व निमिति दोनों का योग मानता है। आत्मा का क्षयोपशम उसका पुरुषार्थ है। उस क्षायोपशम को प्रकट होने के लिए अच्छे निमित्त की आवश्यकता है। मुमुक्षा भाव आत्मा का पुरुषार्थ है। **इस मुमुक्षा भाव को प्रकट होने में पारमार्थिक शिक्षण संस्था एक अच्छे निमित्त का काम करती है। सन्यासी जीवन का यह प्रथम पड़ाव है।** यह एक ऐसी रसायनशाला है, जहाँ मुमुक्षु के भावों का रसायनीकरण होकर वे शुद्ध होते हैं। यह एक ऐसी जननी है, जो मुमुक्षु को त्याग, वैराग्य, अनासक्ति की घूंट पिलाती है। यह एक ऐसा कारखाना है, जो मुमुक्षु रूप में आये अनघड़ पत्थरों को तरास कर चारित्रात्मा बनाता है। यह कषाय उपशमन एवं योग निरोध की प्रयोगशाला है। पारमार्थिक शिक्षण संस्थान में मुमुक्ष को हर क्षण पाठ पढ़ाया जाता है–

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं मासे जयं सये।
जयं भुजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बंधई॥

जयणापूर्वक चलने पर, जयणापूर्वक रुकने पर, जयणापूर्वक बैठने पर, जयणापूर्वक सोने पर, जयणापूर्वक भोजन करने पर, जयणापूर्वक बोलने पर पाप कर्म का बंध नहीं होता है। इस संस्था में मुमुक्षु को प्रशिक्षण दिया जाता है–**णाणस्स सारमायारो**–ज्ञान का सार आचार है। मुमुक्षु ज्ञान व क्रिया दोनों का अभ्यास करे। बिना ज्ञान के आचार अधूरा है तथा बिना आचार के ज्ञान निरर्थक है। संस्था में मुमुक्षु को जैन विद्या के मूल पाठ–नौ तत्त्व, षट्द्रव्य एवं षट्जीवनिकाय का पूर्ण ज्ञान करवाया जाता है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था एक ऐसा निमित्त (माध्यम) है, जो वैरागी को कंकर से शंकर बनाता है। यहां पर विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से साधक को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य बनाए रखने के नुस्खों का प्रशिक्षण दिया जाता है। मुमुक्षु की मज्ञा तक यह अनुप्रेक्षा पहुँचाई जाती है–**संयम: खलु जीवनम्**–संयम ही जीवन है। मुमुक्षु मन, वचन, काया योगों का संयम करे। मुमुक्षु

की आचार-संहिता-कष्ट सहिष्णुता, विनय, सामंजस्य, अनासक्ति, कषाय उपशान्त का पालन करना अनिवार्य है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहकर वैरागी सामुदायिक चेतना का विकास करता है। इसे साधु जीवन के संस्कार निर्माण की पाठशाला कहा जा सकता है। साधु-जीवन के शिक्षण-प्रशिक्षण-परीक्षण की ऐसी अनुपम अनुसंधानशाला विश्व में अन्यत्रण मिलना दुर्लभ है।

आचार्य तुलसी ने मुनि जीवन में अपने गुरु आचार्य कालूगणि को सुझाव दिया कि हमारे धर्मसंघ में साध्वी समाज की शिक्षा की सुचारू व्यवस्था उपलब्ध नहीं है जबकि शिक्षा आधुनिक युग की आवश्यकता व मांग है। नवमाचार्य पूजनीय कालूगणि ने अपनी अंतिम शिक्षा में युवाचार्य तुलसी को साध्वी समाज की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की हिदायत दी। यह शिक्षा आचार्य तुलसी के अवचेतन मन को स्पर्श कर गई। आचार्य पद पर आरूढ़ होने के बाद अपने गुरु का ऋण उतारने हेतु उनकी जन्म जयंती फाल्गुन सुदी 2, संवत् 2005 को आचार्य तुलसी ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था को जन्म दिया। वह एक ऐसा स्वाति नक्षत्र था कि उस दिन साध्वी समाज की शिक्षा रूपी बूंद ने आचार्य तुलसी के शीप रूपी उर्वरा मस्तिष्क में गिरकर पारमार्थिक शिक्षण संस्था रूपी मोती को जन्म दिया। आचार्य तुलसी ने उस शुभ दिन पारमार्थिक शिक्षण संस्था, अणुव्रत एवं आदर्श साहित्य संघ—तीनों को एक साथ जन्म दिया। धन्य है आचार्य तुलसी! धन्य है उनकी प्रज्ञा! उनकी अतीन्द्रिय चेतना को नमन् करते हैं।

पारमार्थिक शिक्षण संस्थान के सृजनहार आचार्य तुलसी को उनकी इस मेधा के लिए मानव जाति युगों-युगों तक उन्हें याद करती रहेगी। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में—''**पारमार्थिक शिक्षण संस्था मुमुक्षुओं का अक्षय कोष है। यह हीरे की खान है, सोने की खान है, कई अवदान दिये हैं, दे रही है तथा देती रहेगी।**'' युवा मनीषी, महातपस्वी, युवाचार्य महाश्रमणजी के अनुसार—यह एक मौलिक संस्था है। इसने कितने-कितने व्यक्तियों को प्रशिक्षित कर सन्यासी वर्ग में सम्मिलित होने की अर्हता से सम्पन्न बनाया है। ममतामयी, वात्सल्यमूर्ति संघ महानिदेशिका साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने इस संस्था को ज्ञान, दर्शन, चारित्र की युगपत शिक्षा देने वाली संस्था बताया है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी पारमार्थिक शिक्षण संस्थान को शिक्षा के साथ संस्कार निर्माण की स्थली के रूप में देखती हैं।

यह संस्था आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करती है। अध्यात्म हमें अपना स्वयं का बोध करवाता है। विज्ञान सृष्टि का बोध करवाता है। आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का अर्थ निश्चय एवं व्यवहार का समन्वय। आचार्य महाप्रज्ञजी कहते हैं—**रहो भीतर, जीओ बाहर।** भीतर सुख से रहने के लिए आध्यात्मिकता आवश्यक है। बाहर सुखपूर्वक जीने के लिए हम विज्ञान का सहारा लेते हैं। अध्यात्म व विज्ञान का समन्वय अनेकांत है। यह संस्था अनेकांत, सापेक्षता व स्याद्वाद के नियमों से संचालित है। यहाँ पर सत्य को अनेक कोणों से जानने का प्रशिक्षण दिया जाता है। सत्य असीम है, वाणी ससीम है। पूर्ण सत्य को वाणी से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है, केवल अनुभव से जाना जाता है। वाणी सत्य के कुछ पर्यायों को ही व्यक्त कर सकती है। यह संस्था सत्य, अहिंसा,

मैत्री, अभय का जीवन जीने की प्रेरणा देती है। अनेकांत के अनुसार कई विरोधी धर्म एक वस्तु में युगपत रहते हैं। जब एक वस्तु में अनेक विरोधी धर्म एक साथ रह सकते हैं तो विरोधी विचार वाले मानव एक साथ क्यों नहीं रह सकते ? पारमार्थिक शिक्षण संस्था सामुदायिक जीवन जीने की कला सीखाती है। संस्था का मुख्य नारा है—**अहिंसा परमो धर्म:, अपरिग्रह परमो धर्म:**। संस्था में निवास करने वाला मुमुक्षु अहिंसक व अपरिग्रही होता है। यहाँ आंशिक अहिंसा का अभ्यास करते-करते मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण कर पूर्ण अहिंसक बन जाता है। संस्था के मुमुक्षु की जीवनशैली अहिंसक है। **''अहिंसा, सव्वभूयखेमंकरी''** अहिंसा प्राणी मात्र का हित करती है। अहिंसा सर्व भारतीय दर्शनों की जननी है। सारे भारतीय दर्शन अहिंसा की कोख से जन्मे हैं। सारे अध्यात्म का सार अहिंसा है। मन, वचन, काया, करना, करवाना, अनुमोदना से किसी प्राणी को लेश मात्र भी कष्ट न हो, यह महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण इस संस्था में दिया जाता है।

शिक्षण संस्थाओं के मुख्य द्वार पर लिखा होता है—ज्ञानार्थ प्रवेश, सेवार्थ प्रस्थान। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मुमुक्षु आध्यात्मिक शक्ति का विकास करने के लिए प्रवेश करता है तथा अध्यात्म को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रस्थान करता है। मुमुक्षु इस संस्था में साधना व आत्म-ज्ञान का अभ्यास कर **''तिन्नाणं तारयाणं''** के राह पर आरूढ़ हो जाता है। वह स्व-पर कल्याण को समर्पित हो जाता है। आज पूरे विश्व में अराजकता, हिंसा, तनाव, असंवेदना, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असहनशीलता, अनुशासनहीनता का बोलबाला है। ऐसे विषम समय में इस संस्था से तैयार हुआ मुमुक्षु सन्यासी रूप में विश्व के सामने एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत होता है। संन्यासी के आदर्श से प्रभावित होकर विश्व-मानस अहिंसा, मैत्री, अभय, नैतिकता, करुणा, सहनशीलता, प्रामाणिकता, अनुशासन, संवेदना, शांति की ओर झुक जाता है। इसी कारण आज पूरे विश्व में संतुलन की स्थिति है वरना अब तक मानवीय मूल्यों का पूर्ण ह्रास हो चुका होता। संन्यासी विश्व पर्यावरण को शांतिमय, सुखमय बनाते हैं, क्योंकि इनका चिंतन विधायक है।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था जैन दर्शन के षट्जीवनिकाय सिद्धान्त में विश्वास व श्रद्धा रखती है। जैन दर्शन की मान्यता है कि पर्यावरण के अंग पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति एवं सूक्ष्म जीवाणु स्वयं हमारी तरह प्राणी है। इनमें वही आत्माएँ हैं, जैसे हम हैं। इनके आहार, भय, मैथुन एवं परिग्रह संज्ञा होती है। ये भी हमारी तरह सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं, संवेदन करते हैं। इनमें भी प्रियता-अप्रियता की अनुभूति होती है। अत: आवश्यकता से अधिक पर्यावरण का दोहन करना अनावश्यक हिंसा है। इस संस्था के मुमुक्षु सदस्य पर्यावरण के इन जीवों की अनावश्यक हिंसा नहीं करते हैं। उनके प्रति संयम करते हैं। यह संस्था संसार व सन्यास के बीच की भेद-रेखा खींचती है। मुमुक्षु राग से विराग की ओर प्रस्थान करता है। इस संस्था में तेरापंथ धर्मसंघ का भविष्य ढलता है। तेरापंथ का भविष्य धवल सेना है, जिसका यहाँ निर्माण होता है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था को पवित्रता, समता, संयम की त्रिवेणी कहा जा सकता है। पवित्रता, समता, संयम को वीतरागता, आनन्द, शांति के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। वीतरागता, आनन्द, शांति, शुक्ल लेश्या, पद्म लेश्या, तेजोलेश्या का प्रतीक

है। इन लेश्याओं से भावों की शुद्धि होती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि पारमार्थिक शिक्षण संस्था ऐसा निमित्त है, जहाँ पर साधना करने से भावों की शुद्धि होती है।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था विश्व मानवता की धरोहर है, जो कि सन्यासियों का निर्माण करती है। सन्यासी **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** के सदस्य होते हैं। पूरा संसार उनका घर होता है। वे पूरे संसार के होते हैं। संन्यासी विश्व में अहिंसा, शांति, सत्य, प्रेम की स्थापना करते हैं। वे मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हैं। मानव को अच्छा मानव बनने की प्रेरणा देते हैं तथा प्रयोग व प्रशिक्षण भी करवाते हैं। सन्यासियों का निर्माण करने वाली ऐसी पवित्र एवं उपयोगी संस्था को शत्-शत् नमन।

* मानद सलाहकार, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूँ (राज.)
* मानद संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था लाडनूँ (राज.)